|| श्रीः ||

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
४८

श्रीदैवज्ञकलाधरशर्मप्रणीतः

शिशुबोधः

सान्वय-चन्द्रिका-भाषाटीका-समन्वितः

टीकाकारः—
डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
साहित्य-आयुर्वेद-आचार्य
एम. ए., पी-एच. डी. एस-सी. ए.

Chaukhambha Publications
4262/3, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110 002
Phones : 23268639, 23259050
E-mail : cpub@vsnl.net
chaukhambhapublication@gmail.com

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

प्रकाशक
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : 2335263

संस्करण : 2012
मूल्य : 20.00

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : 32996391
ई-मेल : chaukhamba_neeraj@yahoo.com



चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113
दिल्ली 110007
दूरभाष : 23856391



चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001
दूरभाष : 2420404

अपनी बात

श्रीकामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा की मध्यमा परीक्षा में निर्धारित 'नाड़ीवत्सपञ्चविंशतिका' तथा 'शिशुबोध' की एक-दो टीकाएँ सामने आयीं। यों तो शिशुबोध का संकलन ही अपने में लघुकाय तथा सरल भाषा मे होने के कारण सुखबोध है, परन्तु मुझे जो-जो व्याख्याएँ देखने को मिलीं, उनमें प्रयत्न यह हुआ है कि ग्रन्थ दुर्बोध हो जाय। कहा नहीं जा सकता, ऐसा प्रयास टीकाकारों का रहा है या पुस्तक-व्यवसायियों का, दोनों ही सोच लें।

प्रायः पाठ्यक्रम में निर्धारित ऐसी पुस्तकों का सरल भाषा में अर्थ एवं भाव स्पष्ट कर देना मात्र सफलता की चरम श्रेणी होती है, न कि ग्रन्थ को और दुरूह करने का प्रयास और न 'मक्षिकास्थाने मक्षिकासन्निवेशः' ही उचित है। अस्तु।

प्रस्तुत टीका केवल छात्रों की परीक्षा को दृष्टि में रखते हुए लिखी गयी है। बाजार में उपलब्ध अन्य संस्करणों की अपेक्षा इसकी छपाई भी गेस पेपरों अथवा कुञ्जियों की जैसी न करके यथासम्भव अच्छी की गयी है, जिसका अनुमान पाठक स्वयं करेंगे।

प्रिय छात्रवर्ग ! आपके हाथों में अन्य संस्करण भी आये होंगे। अब इस संस्करण को भी आप सभी दृष्टियों से देखें। यदि आपका इससे कुछ भी मनस्तोष होगा तो मैं अपने को कृतार्थ समझूंगा। वाराणसेय चौखम्बा सुरभारती परिवार धन्यवाद का पात्र है, जिसने इस लघुकाय ग्रन्थ का सादर प्रकाशन किया।

अन्त में मानव स्वभाव सुलभ त्रुटियों के लिए क्षमा-याचना करते हुए, हम भगवान् श्रीविश्वनाथ की वन्दना कर अपनी बात को समाप्त करते हैं।

निवेदक—

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

विषय-सूची

॥ श्रीः ॥

शन्नो दिवि चरा ग्रहाः

शिशुबोधः

सान्वय-चन्द्रिका-भाषाटीका-समन्वितः

मङ्गलाचरणम्

भास्करञ्च प्रणम्याऽऽदौ शङ्करञ्च गजाननम् ।
करोमि बालबोधाय शिशुबोधमविस्तरम् ॥ १ ॥

टीकाकर्तुर्मङ्गलाचरणम्

पञ्चाङ्गज्योतिषा पूर्णः सङ्ग्रहोऽयं विराजते ।
कल्पतां शिशुबोधाय शिशुबोधः सदा भुवि ॥

अन्वयः—आदौ भास्करं, गजाननं शङ्करञ्च प्रणम्य बालबोधाय अविस्तरं शिशुबोधं करोमि ॥ १ ॥

हिन्दी—मैं (दैवज्ञ कलाधर शर्मा) सर्वप्रथम सूर्य (गहनक्षत्रों में प्रधान), गणेश तथा शिवजी को प्रणाम करके संक्षिप्त शिशुबोध नामक ग्रन्थ की रचना करता हूँ ॥ १ ॥

तिथयः

पड़िव (प्रतिपदा), द्वितीया, तृतीया, चौथ (चतुर्थी), पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पञ्चदशी (पूर्णिमा, अमावस्या) (कृष्णपक्षे अमावस्या शुक्लपक्षे तु पूर्णिमा) ।

हिन्दी—प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा (शुक्लपक्ष में) अथवा अमावस्या (कृष्णपक्ष में), ये १५ तिथियाँ होती हैं ।

वक्तव्य—ऊपर गद्य में दिये गये कतिपय नाम मिथिला भाषा के हैं ।

वार-नामानि

रविश्चन्द्रः कुजश्चैव बुधश्चैव बृहस्पतिः ।
तथा शुक्रः शनिश्चैव वारनामाभिधीयते ॥ २ ॥

अन्वयः—रविः चन्द्रः कुजः बुधः बृहस्पतिः तथा शुक्रः शनिः च वारनाम अभिधीयते ॥ २ ॥

हिन्दी—रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि—ये ७ वार होते हैं ॥ २ ॥

नक्षत्र-नामानि

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, (अभिजित्), श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती ।

हिन्दी—अश्विनी से लेकर रेवती तक २७ नक्षत्र होते हैं, कहीं-कहीं २८वें नक्षत्र अभिजित् का भी प्रयोग देखा जाता है। इसकी उत्पत्ति उत्तराषाढा तथा श्रवण के योग से होती है ।

योग-नामानि

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ ३ ॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ।
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥ ४ ॥

अन्वयः—नात्र किमपि विशेषोऽन्वये ।

हिन्दी—विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र और वैधृति—ये क्रम से २७ योग होते हैं ॥ ३-४ ॥

करण-नामानि

ववाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ।
गराभिधानं वणिजश्च विष्टिरित्याहुरार्य्याः करणानि सप्त ॥ ५ ॥

अन्वयः—ववाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततः तैतिलनामधेयं भवेत् । गराभिधानं वणिजं विष्टिः च इति सप्तकरणानि आर्याः आहुः ॥ ५ ॥

हिन्दी—वव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि—ये ७ करण ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों ने कहे हैं ॥ ५ ॥

स्थिरकरणानि

चतुर्दशी या शशिना प्रहीणा तदर्द्धभागे शकुनिर्द्वितीये ।
दर्शार्द्धयोस्तश्चतुरङ्घ्रिनागौ किंस्तुघ्नमाद्ये प्रतिपद्दले च ॥ ६ ॥

अन्वयः—शशिना प्रहीणा या चतुर्दशी कृष्णपक्षीया द्वितीये तदर्धभागे शकुनिः स्यात् । दर्शार्द्धयोर्भागयोः क्रमेण चतुरङ्घ्रिनागौ करणौ स्तः । आद्ये प्रतिपद्दले किंस्तुघ्नं स्यात् ॥ ६ ॥

हिन्दी—कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तिथि के उत्तरार्ध में शकुनि करण, अमावास्या के पूर्वार्ध में चतुष्पद (चतुरंघ्रि) और उत्तरार्ध में नाग तथा प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है । ये चार स्थिर कहे गये हैं, क्योंकि इनका परिवर्तन नहीं होता ॥ ६ ॥

राशयः

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनुः, मकर, कुम्भ, मीन ।

हिन्दी—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन—ये १२ राशियाँ होती हैं ।

होडाचक्रम्

[1]चूचेचोला अश्विनी, लीलूलेलो भरणी, अइउए कृत्तिका, ओवावीवू रोहिणी, वेवोकाकी मृगशिरा, कुघङछ आर्द्रा, केकोहहि पुनर्वसु,

---

१. नाम कभी-कभी संयुक्ताक्षरों से भी रखे जाते हैं, उनमें आदि अक्षर से ही राशि का ग्रहण करें । जैसे—ज्ञानेश्वर (ज्+ञ्+आ=ज्ञा), क्षेत्रेश (क्+ष+ए), त्रिभुवन (त्+र्+इ) इत्यादि ।

हूहेहोडा पुष्य, डीडुडेडो आश्लेषा, मामीमूमे मघा, मोटाटीटू पूर्वा-फाल्गुनी, टेटोपपि उत्तराफाल्गुनी, पूषणठ हस्त, पेपोरारि चित्रा, रुरे-रोता स्वाती, तीतूतेतो विशाखा, नानीनूने अनुराधा, नोयायीयु ज्येष्ठा, येयोभभि मूल, भूधाफाडा पूर्वाषाढा, भेजोजाजि उत्तराषाढा, जूजे-जोखा अभिजित्, खीखूखेखो श्रवण, गागीगूगे धनिष्ठा, गोसासीसू शत-भिषा, सेसोददि पूर्वाभाद्रपदा, दूथझत्र उत्तराभाद्रपदा, देदोचचि रेवती।

शतपदचक्रम्

अ	व	क	ह	ड	मो	मे	मु	मि	म
इ	वि	कि	हि	डि	टो	टे	टु	टि	ट
उ	वु	कु घ ङ छ	हु	डु	पो	पे	पू ष ण ठ	पि	प
ए	वे	के	हे	डे	रो	रे	रु	रि	र
ओ	वो	को	हो	डो	तो	ते	तु	ति	त
ल	लि	लु	ले	लो	खो	जो	भो	यो	नो
च	चि	चु	चे	चो	खे	जे	भे	ये	ने
द	दि	दू थ झ ञ	दे	दो	खु	जु	भू धा फा ढा	यु	नु
स	सि	सु	से	सो	खि	जि	भि	यि	नि
ग	गि	गु	गे	गो	ख	ज	भ	य	न

न प्रोक्ता ङञणा वर्णा नामादौ सन्ति ते न हि।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेयं तदादिर्नाम एव हि॥

राशिचक्रम्

चरण	चू चे चो ला	ली लु ले लो	अ इ उ ए	ओ वा वी वू	वे वो का कि	कु घ ङ छ	के को ह हि
नक्षत्र	अश्विनी ४	भरणी ४	कृत्तिका १, ३	रोहिणी ४	मृगशिरा २, २	आर्द्रा ४	पुनर्वसु ३, १
राशि	मेष	मेष	मेष, वृष	वृष	वृष, मिथुन	मिथुन	मिथुन, कर्क
चरण	हू हे हो डा	डी डु डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो प पि	पू ष ण ठ	पे पो रा रि
नक्षत्र	पुष्य ४	आश्लेषा ४	मघा ४	पूर्वा-फाल्गुनी ४	उत्तरा-फाल्गुनी १, ३	हस्त ४	चित्रा २, २
राशि	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह, कन्या	कन्या	कन्या, तुला
चरण	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यु	ये यो भ भि	भू धा फा ढा	भे भो ज जि
नक्षत्र	स्वाति ४	विशाखा ३, १	अनुराधा ४	ज्येष्ठा ४	मूल ४	पूर्वाषाढा ४	उ० षाढ़ा १, ३
राशि	तुला	तुला, वृश्चिक	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध. मकर
चरण	जू जे जो खा	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो द दि	दू थ झ ञ	दे दो च चि
नक्षत्र	अभिजित्	श्रवण ४	धनिष्ठा २, २	शतभिषा ४	पू.भाद्रपदा ३, १	उ.भाद्रपदा ४	रेवती ४
राशि	०	मकर	मकर, कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ, मीन	मीन	मीन

राशीनां परिचयः

अश्विनी-भरणी-कृत्तिकानां पादे मेषः। कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोऽर्धं वृषः। मृगशिरोऽर्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः। पुनर्वसुपादमेकं पुष्याऽऽश्लेषान्तं कर्कः। मघा च पूर्वाफाल्गुन्युत्तरापादे सिंहः। उत्तरायास्त्रयः पादा हस्तचित्रार्धं कन्या। चित्रार्धं स्वाति-विशाखापादत्रयं तुला। विशाखापादमेकमनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः। मूलश्च पूर्वाषाढोत्तरापादे धनुः। उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्धं मकरः। धनिष्ठार्धं शतभिषा-पूर्वाभाद्रत्रयं कुम्भः। पूर्वाभाद्रपदापाद-मेकमुत्तराभाद्रपदारेवत्यन्तं मीनः।

इसका अर्थ पृष्ठ ५ के चक्र द्वारा स्पष्ट हो जाता है।

नक्षत्रदेवताः

अश्वो यमो नलो ब्रह्मा शशी रुद्रोऽदितिर्गुरुः।
सर्पः पिता भगश्चैव अर्यमा च दिवाकरः ॥ ७ ॥
त्वष्टा वायुश्च शक्राग्नी मैत्रञ्चैव पुरन्दरः।
निर्ऋतिः सलिलं चैव विश्वेदेवा हरिस्तथा ॥ ८ ॥
वसवो वरुणश्चैव अजपादस्तथैव च।
अहिर्बुध्न्यस्तथा पूषा क्रमान्नक्षत्रदेवताः ॥ ९ ॥

अन्वयः—अश्वः, यमः, अनलः, ब्रह्मा, शशिः, रुद्रः, अदितिः, गुरुः, सर्पः, पिता, भगः, अर्यमा, दिवाकरः, त्वष्टा, वायुः, शक्राग्नी, मैत्रं, पुरन्दरः, निर्ऋतिः, सलिलं, विश्वेदेवाः तथा हरिः, वसवः, वरुणः, अजपादः, अहिर्बुध्न्यः तथा पूषा एताः क्रमात् नक्षत्रदेवताः स्युः ॥ ७–९ ॥

हिन्दी—अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रमशः २७ देवता ऊपर कहे गये हैं। क्रम से समझ लें। केवल प्रथम अश्वः का अर्थ अश्विनीकुमार होगा, विशाखा नक्षत्र के शक्र और अग्नि—ये दो देवता होते हैं। अन्य सभी नक्षत्र के १–१ देवता हैं, शेष आगे चक्र में देखें ॥ ७–९ ॥

नक्षत्र-स्वामी

नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी
अश्विनी	अश्विनीकुमार	मघा	पितर	मूल	निऋंति
भरणी	यमराज	पूर्वाफाल्गुनी	भग	पूर्वाषाढा	जल
कृतिका	वह्नि	उ० फाल्गुनी	अर्यमा	उत्तराषाढा	विश्वेदेवा
रोहिणी	ब्रह्मा	हस्त	सूर्य	श्रवण	विष्णु
मृगशिरा	चन्द्रमा	चित्रा	त्वष्टा	धनिष्ठा	वसु
आर्द्रा	शिव	स्वाती	वायु	शतभिषा	वरुण
पुनर्वसु	अदिति	विशाखा	इन्द्र, अग्नि	पूर्वभाद्रपदा	अजपाद
पुष्य	गुरु	अनुराधा	मित्र	उ०भाद्रपदा	अहिर्बुध्न्य
आश्लेषा	सर्प	ज्येष्ठा	इन्द्र	रेवती	पूषा

पूर्वादिदिक्षु चन्द्रवासः

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १० ॥

अन्वयः—इन्द्रभागे मेषे सिंहे धनुषि च, याम्ये वृषे कन्यामकरे च, प्रतीच्यां युग्मे तुलायां घटे च, उत्तरस्यां दिशि कर्कालिमीने (चन्द्रवासः भवति) ॥१०॥

हिन्दी—मेष, सिंह, धन का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में और कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर में रहता है ॥ १० ॥

यात्रायां चन्द्रविचारः

सम्मुखस्थेऽर्थलाभः स्याद् दक्षिणे सुखसम्पदौ ।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ ११ ॥

अन्वयः—सम्मुखस्थे चन्द्रे अर्थलाभः स्याद् दक्षिणे सुखसम्पदौ पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे धनक्षयः (स्यात्) ॥ ११ ॥

हिन्दी—यात्रा के समय चन्द्रमा सामने की ओर हो तो धन-लाभ, दक्षिण में हो तो सुख और सम्पत्ति, पीछे की ओर होने पर शोक और सन्ताप तथा बायीं ओर चन्द्रमा हो तो धन का नाश होता है ॥ ११ ॥

चन्द्रवर्णज्ञानं तत्फलञ्च

चालौ मेषसिंहेऽरुणो युद्धकारी वृषे कर्कटे तौलिके श्वेतसिद्धिः ।
धनुर्मीनयुग्मेषु पीतोऽथ लक्ष्मीमकर-कुम्भ-कन्या-शशी-श्याममृत्युः ॥१२॥

अन्वयः—अलौ मेषसिंहे च (राशौ) अरुणः, युद्धकारी (भवति), वृषे कर्कटे तौलिके श्वेतवर्णः, सिद्धिः (फलं), धनुर्मीनयुग्मेषु पीतः, लक्ष्मीः, मकर-कुम्भ-कन्या (स्थः) शशी श्यामः (फलं च) मृत्युः ॥ १२ ॥

हिन्दी—वृश्चिक, मकर, सिंह राशि के चन्द्रमा का लाल वर्ण होता है, यह यात्रा में युद्धकारक होता है । वृष, कर्क, तुला राशि के चन्द्रमा का श्वेत वर्ण होता है, यह यात्रा में सिद्धिदायक होता है । धनु, मीन, मिथुन के चन्द्रमा का पीत वर्ण होता है, यह यात्रा में लक्ष्मीदायक होता है और मकर, कुम्भ, कन्या राशि के चन्द्रमा का श्याम वर्ण होता है; यह यात्रा में मृत्युदायक होता है, अतः निषिद्ध है । इस श्लोक का चौथा चरण छन्द की दृष्टि से अशुद्ध है ॥ १२ ॥

दग्धास्तिथयः

द्वितीया च धनुर्मीने चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यामिथुनगाऽष्टमी ॥ १३ ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ १४ ॥

अन्वयः—धनुर्मीने द्वितीया, वृषकुम्भयोश्चतुर्थी, मेषकर्कयोः षष्ठी, कन्यामिथुनगा अष्टमी, सिंहे वृश्चिके दशमी, मकरे तुले द्वादशी, एताः दग्धास्तिथयः शुभे कर्मणि वर्जिताः स्युः ॥ १३–१४ ॥

हिन्दी—धनु, मीन के चन्द्रमा के दिन द्वितीया तिथि, वृष, कुम्भ के चन्द्रमा के दिन चतुर्थी तिथि, मेष, कर्क के चन्द्रमा के दिन षष्ठी तिथि, मिथुन कन्या के चन्द्रमा के दिन अष्टमी तिथि, सिंह, वृश्चिक के चन्द्रमा के दिन दशमी तिथी और तुला, मकर के चन्द्रमा के दिन द्वादशी तिथि दग्ध होती है। ये पूर्वोक्त सभी दग्धा तिथियाँ शुभ कर्मों में वर्जित होती हैं ॥ १३–१४ ॥

तिथिवारयोगोत्थनिषिद्धफलम्

द्वादश्यर्कयुता भवेन्न शुभदा सोमेन चैकादशी ।
भौमेनाऽपि युता तथैव दशमी नेष्टा तृतीया बुधे ॥ १५ ॥
षष्ठी नेष्टफलप्रदा गुरुदिने शुक्रे द्वितीया तथा ।
सर्वारम्भविनाशनस्य जननी सूर्यात्मजे सप्तमी ॥ १६ ॥

अन्वयः—अर्कयुता द्वादशी, सोमेन एकादशी, अपि भौमेन युता दशमी, बुधे तृतीया, गुरुदिने षष्ठी इष्टफलप्रदा न, तथा शुक्रे द्वितीया, सूर्यात्मजे सप्तमी सर्वारम्भविनाशस्य जननी भवति ॥ १५–१६ ॥

हिन्दी—रविवार को द्वादशी, सोमवार को एकादशी, मङ्गल को दशमी, बुधवार को तृतीया, गुरुवार को षष्ठी इष्टफलदायक नहीं होती तथा शुक्रवार को द्वितीया और शनिवार को सप्तमी हो तो कोई कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए, क्योंकि इन योगों में आरम्भ किया कार्य सिद्ध नहीं होता ॥ १५–१६ ॥

मृत्युयोगाः

त्यज रविमनुराधे वैश्वदेवञ्च सोमे
शतभिषमपि भौमे चन्द्रजं चाश्विनीषु ।
मृगशिरसि सुरेज्यं सर्पदेवञ्च शुक्रे
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगा भवन्ति ॥ १७ ॥

अन्वयः—अनुराधे रविं, सोमे वैश्वदेवम् अपि, भौमे शतभिषम्, अश्विनीषु चन्द्रजं, मृगशिरसि सुरेज्यं, सर्पदेवं शुक्रे, हस्ते रविसुतम् अपि त्यज, एते मृत्युयोगाः भवन्ति ॥ १७ ॥

हिन्दी—रविवार को अनुराधा, सोमवार को उत्तराषाढा, मंगलवार को आश्लेषा और शनिवार को हस्तनक्षत्र का संयोग होने से मृत्युयोग होता है। उनको सभी कार्यों में वर्जित करें ॥ १७ ॥

योगिनी-विचारः

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां च सा स्मृता ॥ १८ ॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां च योगिनी।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यां दिशि योगिनी ॥ १९ ॥
चतुर्दश्यां च षष्ठयां च पश्चिमायां च योगिनी।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे च पार्वती ॥ २० ॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत्।
ईशानकोणे चाष्टम्यां यथा दर्शे च योगिनी ॥ २१ ॥

अन्वयः—प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी, तृतीयायाम् एकादश्यां च सा अग्निकोणे स्मृता, पञ्चम्यां त्रयोदश्यां च दक्षिणस्यां योगिनी, चतुर्थ्यां द्वादश्यां च नैर्ऋत्यां दिशि योगिनी षष्ठयां चतुर्दश्यां च पश्चिमायां योगिनी, सप्तम्यां पूर्णिमायां च वायुकोणे पार्वती, द्वितीयायां दशम्यां च उत्तरस्यां शिवा, अष्टम्यां तथा दर्शे च ईशानकोणे योगिनी भवेत् ॥१८-२१॥

हिन्दी—प्रतिपदा और नवमी को पूर्वदिशा में, तृतीया, एकादशी को आग्नेयकोण में, पञ्चमी, त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी, द्वादशी को नैर्ऋत्यकोण में, षष्ठी, चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी, पूर्णिमा को वायुकोण में, द्वितीया, दशमी को उत्तर में, अष्टमी, अमावस्या को ईशानकोण में योगिनी निवास करती हैं।

वक्तव्य—उक्त पद्य में योगिनी के पर्यायों में शिवा और पार्वती शब्दों का प्रयोग हुआ है, उनको भिन्न-भिन्न न समझें ॥ १८-२१ ॥

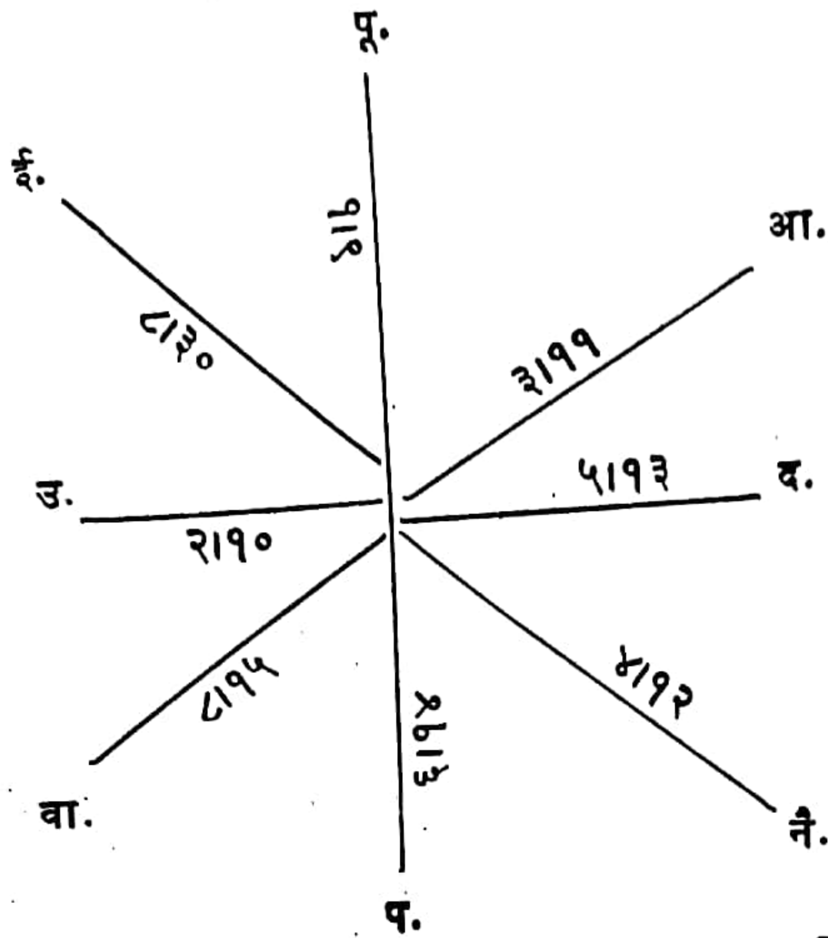
योगिनी-वासफलम्

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥ २२ ॥

अन्वयः—वामे योगिनी सुखदा, पृष्ठे वाञ्छितदायिनी, दक्षिणे धनहन्त्री, सम्मुखे च मरणप्रदा भवति ॥ २२ ॥

हिन्दी—बायीं योगिनी यात्रा में सुखद, पीछे की मनोवांछित फल देने वाली, दाहिनी ओर की धननाशक और सामने की योगिनी मरणतुल्य कष्टदायक होती है ॥ २२ ॥

योगिनीवासचक्रम्



जन्मेन्दुनन्दाऽर्कमघा च मेषे वृषे शनिः पञ्चमहस्तपूर्णाः ।
स्वाती च युग्मे नवचन्द्रभद्राः कर्केऽनुराधा बुधयुग्मभद्राः ॥२३॥
सिंहे जयाषट्कशनिश्च मूलं पूर्णा शनिर्दिक् श्रवणः स्त्रियां च ।
गुरुस्त्रिरिक्ताशतभे तुले च नन्दाऽलिके रेवतिसप्तशुक्राः ॥२४॥
चापे चतुःशुक्रजयाभरण्योः मृगेऽष्टमो रोहिणिभौमरिक्ताः ।
कुम्भे जयार्द्रा गुरुरुद्रघाता झषे भृगुश्चान्त्यभुजङ्गपूर्णाः ॥२५॥

अन्वयः—मेषे जन्मेन्दुनन्दाऽर्कमघाः, वृषे शनिः पञ्चमहस्तपूर्णाः, युग्मे स्वाती नवचन्द्रभद्राः, कर्के अनुराधा बुधयुग्मभद्राः, सिंहे जयाषट्कशनिः मूलं च, स्त्रियां पूर्णा शनिः दिक् श्रवणः, तुले गुरुः त्रिरिक्ताशतभे, अलिके नन्दरेवतिसप्तशुक्रः, चापे चतुःशुक्रजयाभरण्यः, मृगे अष्टमः रोहिणिभौमरिक्ताः, कुम्भे जयाऽऽर्द्रा-गुरुरुद्राः झषे भृगुः अन्त्यभुजङ्गपूर्णाः च घाताः स्युः ॥ २३-२५ ॥

हिन्दी—मेष राशि को मेष (पहला) का चन्द्रमा, नन्दा तिथियाँ, रविवार, मघानक्षत्र, वृषराशि को शनि, पाँचवाँ चन्द्र, हस्त, पूर्णा तिथियाँ, मिथुन राशि को स्वाती, नवाँ चन्द्रमा, सोम भद्रातिथियाँ, कर्क राशि को अनुराधा, बुध, दूसरा चन्द्रमा, भद्रा तिथियाँ, सिंह राशि को जया तिथियाँ, छठा चन्द्रमा, शनि,

मूल, कन्या राशि को पूर्णा तिथियाँ, शनि, दशम चन्द्रमा, श्रवण, तुला राशि को रिक्ता तिथियाँ, तीसरा चन्द्रमा, गुरु, शतभिषा, वृश्चिक राशि को नन्दा तिथियाँ, रेवती, सातवाँ चन्द्रमा, शुक्र, धनु राशि को चौथा चन्द्रमा, शुक्र, जया तिथियाँ, भरणी, मकर राशि को आठवाँ चन्द्र, रोहिणी, मंगल, रिक्ता तिथियाँ, कुम्भ राशि को जया तिथियाँ, आर्द्रा, गुरु, ग्यारहवाँ चन्द्र और मीन राशि को शुक्र, बारहवाँ चन्द्र, आश्लेषा और पूर्णा तिथियाँ घातक होती हैं ॥२३-२५॥

घातचन्द्रचक्रम्

राशि	मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तिथि	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मङ्गल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा०	अनु०	मूल	श्रवण	शत०	रेवती	भरणी	रोहि०	आर्द्रा	आश्ले०
चंद्रमा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२

स्त्रीणां घातचन्द्राः

महीनागशैलाङ्कवेदाग्नितर्काः कराशाशिवाः पाण्डवश्चित्रभानुः ।
कुरङ्गीदृशां घातचन्द्रास्त्वजादेर्नृनार्योः समं घाततिथ्यादिकं हि ॥२६॥

अन्वयः—कुरङ्गीदृशाम् अजादेः महीनागशैलाङ्क वेदाग्नितर्काः, कराशाशिवाः पाण्डवश्चित्रभानुः घातचन्द्राः (भवन्ति), हि घाततिथ्यादिकं नृनार्योः समं (बोध्यम्) ॥ २६ ॥

हिन्दी—स्त्रियों के घातचन्द्र मेष, वृश्चिक, तुला, धनु, कर्क, मिथुन, कन्या, वृष, मकर, कुम्भ, सिंह और मीन हैं, किन्तु घाततिथ्यादि उपर्युक्त श्लोक के समान ही समझें ॥ २६ ॥

घातचन्द्रस्यापवादः

विवाहचूडाव्रतबन्धयज्ञे पट्टाभिषेके च तथैव राज्ञः ।
सीमन्तकार्ये खलु जातके च नो घातचन्द्राद्यमिदं विचिन्त्यम् ॥२७॥

अन्वयः—विवाहचूडाव्रतबन्धयज्ञे तथा राज्ञः पट्टाभिषेके, सीमन्तकार्ये, जातके च खलु कार्ये इदं घातचन्द्राद्यं नो एव विचिन्त्यम् ॥ २७ ॥

हिन्दी—चूडाकर्म, व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), विवाह, यज्ञ, राजा के राज्याभिषेक, सीमन्तकर्म और जातकर्म में इस घातचन्द्र आदि का विचार नहीं करना चाहिए ॥ २७ ॥

घातचन्द्रे त्याज्याः

तीर्थयात्राविवाहान्नप्राशनोपनयादिषु ।
सर्वमाङ्गल्यकार्येषु घातचन्द्रं विचिन्तयेत् ॥ २८ ॥
युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा ।
राजसेवावाहनादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत् ॥ २९ ॥

अन्वयः—तीर्थयात्रा-विवाहान्नप्राशनोपनयादिषु सर्वमाङ्गल्यकार्येषु घातचन्द्रं विचिन्तयेत् । युद्धे विवादे च कुमारीपूजने तथा राजसेवावाहनादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत् ॥ २८-२९ ॥

हिन्दी—तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, यज्ञोपवीतसंस्कार, सभी मांगलिक कार्यों में घातचन्द्र का विचार करें। युद्ध में, विवाद (लड़ाई-झगड़ा) में, कुमारीपूजन में, सरकारी नौकरी में और वाहन-निर्माण (सवारी करना, बनाना आदि) में घातचन्द्र त्याज्य होता है ॥ २८-२९ ॥

यात्रायां शुभनक्षत्राणि

अश्विनी रेवती ज्येष्ठा पुष्यो हस्तः पुनर्वसुः ।
मैत्रं मृगशिरो मूलं यात्रायामुत्तमाः स्मृताः ॥ ३० ॥

अन्वयः—अश्विनी, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्यः, हस्तः, पुनर्वसुः, मैत्रं, मृगशिराः, मूलं, यात्रायाम् उत्तमाः स्मृताः ॥ ३० ॥

हिन्दी—अश्विनी, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा और मूल—ये नक्षत्र यात्रा में उत्तम माने गये हैं ॥ ३० ॥

यात्रायां निषिद्धनक्षत्राणि

भरणी कृत्तिकाश्लेषा विशाखा चोत्तरात्रयम् ।
मघा पशुपतिश्चैव यात्रायां मरणप्रदाः ॥
उक्तेभ्योऽन्यनक्षत्राणि मध्यमानि बुधा जगुः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—भरणी कृत्तिकाऽऽश्लेषा विशाखा उत्तरात्रयं मघा पशुपतिः च यात्रायां मरणप्रदाः (भवन्ति)। बुधाः उक्तेभ्यः अन्यनक्षत्राणि मध्यमानि जगुः ॥ ३१ ॥

हिन्दी—भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, मघा और आर्द्रा—इन नक्षत्रों में यात्रा करने से मरणतुल्य कष्ट मिलता है। पूर्वोक्त शुभ नक्षत्रों के अतिरिक्त नक्षत्र यात्रा में सामान्य फल देते हैं, ऐसा विद्वानों का मत है ॥ ३१ ॥

यमघण्टयोगाः

मघा स्वाती रवौ प्रोक्ते गुरौ मूलं च रेवती।
स्वाती च रोहिणी शुक्रे शनौ शतभिषाश्रवे ॥ ३२ ॥
आश्लेषा च तथा सोमे भरणीमैत्रभे कुजे।
आर्द्रोत्तराफाल्गुनी च यमघण्टो बुधे स्मृतः ॥ ३३ ॥
यमघण्टे त्यजेदष्टौ मृत्यौ द्वादशनाडिकाः।
अन्येषां पापयोगानां मध्याह्नात् परतः शुभम् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—रवौ मघा स्वाती च, गुरौ मूलं रेवती, शुक्रे स्वाती रोहिणी, शनौ शतभिषा श्रवणे च, सोमे आश्लेषा तथा कुजे भरणी मैत्रभे, बुधे आर्द्रोत्तराफाल्गुनी, यमघण्टः स्मृतः। यमघण्टे अष्टौ नाडिकाः, मृत्यौ द्वादश नाडिकाः त्यजेत्, अन्येषां पापयोगानां मध्याह्नात् परतः शुभम् (भवति) ॥ ३२–३४ ॥

हिन्दी—रविवार को मघा, स्वाती, गुरुवार को मूल, रेवती, शुक्रवार को स्वाती, रोहिणी, शनिवार को शतभिषा, श्रवण, सोमवार को आश्लेषा, मंगलवार को भरणी, अनुराधा और बुधवार को आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी यमघण्ट योग होता है। यमघण्ट योग की पहली आठ घड़ियाँ तथा मृत्युयोग की पहली बारह घड़ियाँ त्याज्य होती हैं। इनके अतिरिक्त अन्य अशुभ योग मध्याह्न के बाद शुभ माने जाते हैं ॥ ३२–३४ ॥

विनार्द्धप्रहराः

रवौ वर्ज्याश्चतुःपञ्च सोमे सप्तद्वयं तथा।
कुजे षष्ठद्वयञ्चैव बुधे बाणतृतीयकम् ॥ ३५ ॥

गुरौ सप्ताष्टकं ज्ञेयं त्रिचत्वारि च भार्गवे ।
शनावाद्यन्तषष्ठं च वर्ज्यार्द्धप्रहरा बुधैः ॥ ३६ ॥

अन्वयः—रवौ चतुःपञ्च वर्ज्याः तथा सोमे सप्तद्वयं, कुजे षष्ठद्वयं चैव, बुधे बाणतृतीयकं, गुरौ सप्ताष्टकं ज्ञेयं, भार्गवे त्रिचत्वारि, शनौ आद्यन्तषष्ठम्, एते अर्द्धप्रहराः बुधैः (शुभकर्मसु) वर्ज्याः ॥ ३५-३६ ॥

हिन्दी—रविवार को चौथा-पाँचवाँ, सोमवार को दूसरा-सातवाँ, मंगल को दूसरा-छठा, बुध को तीसरा-पाँचवाँ, गुरुवार को सातवाँ-आठवाँ, शुक्र को तीसरा-चौथा और शनिवार को पहला-छठा तथा आठवाँ अर्धप्रहर को विद्वानों ने शुभ कार्यों में वर्जित करने के लिए कहा है ॥ ३५-३६ ॥

रात्र्यर्द्धप्रहराः

रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे विधुजे शरागौ ।
गुरौ रसाष्टौ भृगुजे तृतीयं शनौ रसाद्यन्तमिति क्षपायाम् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—रवौ रसाब्धी, हिमगौ हयाब्धी, महीजे द्वयं, विधुजे शरागौ, गुरौ रसाष्टौ, भृगुजे तृतीयं शनौ रसाद्यन्तम् इति क्षपायां (अर्द्धप्रहराः स्यु) ॥३७॥

हिन्दी—रविवार को चौथा-छठा, सोमवार को चौथा-सातवाँ, मंगलवार को दूसरा, बुधवार को पाँचवाँ-सातवाँ, गुरुवार को छठा-आठवाँ, शुक्रवार को तीसरा और शनिवार को पहला-छठा-आठवाँ अर्धप्रहर रात्रि में वर्जित हैं ॥३७॥

ताराविचारः

जन्मभाद् गणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधिः क्रमात् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं तारां विनिर्दिशेत् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—आदौ जन्मभात् दिनधिष्ण्यावधिः गणयेत्, नवभिः भागं हरेत्, शेषं क्रमात् तारां विनिर्दिशेत् ॥ ३८ ॥

हिन्दी—सर्वप्रथम जन्म-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनें, जितनी संख्या प्राप्त हो उसमें ९ का भाग दें, शेष क्रमशः तारा होती हैं ॥ ३८ ॥

उदाहरण—चूड़ामणि नामक पुरुष की यात्रा में तारा का विचार करना है । यात्रा दिन नक्षत्र **विशाखा**, यात्री का नक्षत्र **अश्विनी**, अश्विनी से विशाखा तक गिनने पर १६ संख्या प्राप्त हुई, इनमें ९ का भाग देने पर ७ शेष रहा, ७वीं तारा वध है, यह अशुभ होती है ।

तारानामानि

जन्म सम्पत् विपत् क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ।
तथा मैत्रातिमैत्रे च नव तारा: प्रकीर्तिताः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरिः, साधकः, वधः, मैत्रातिमैत्रे, इति नव ताराः पूर्वैः प्रकीर्तिताः ॥ ३९ ॥

हिन्दी—जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र और अतिमैत्र—ये नौ ताराएँ पूर्वाचार्यों ने कही हैं ॥ ३९ ॥

शुभाऽशुभताराः

द्विचतुःषडष्टनवगतास्ताराः शुभप्रदाः ।
जनुर्विपत्प्रत्यरिश्च वधाख्या न शुभप्रदाः ॥ ४० ॥

अन्वयः—द्वि-चतुः-षडष्ट-नव-गताः ताराः शुभप्रदाः, जनुर्विपत्प्रत्यरिः वधाख्याश्च ताराः शुभप्रदाः न ॥ ४० ॥

हिन्दी—दूसरी, चौथी, छठीं, आठवीं और नवीं ताराएँ शुभ होती हैं। जन्म, विपत्, प्रत्यरि और वध ताराएँ अशुभ होती हैं ॥ ४० ॥

दुष्टताराशान्तिप्रकारः

प्रत्यरौ लवणं दद्याच्छाकं दद्यात् त्रिजन्मसु ।
गुडं विपत्तितारायां सुवर्णं निधने तिलम् ॥ ४१ ॥

अन्वयः—प्रत्यरौ लवणं दद्यात्, त्रिजन्मसु शाकं, विपत्तितारायां गुडं, निधने (तारायां) तिलं सुवर्णं च दद्यात् ॥ ४१ ॥

हिन्दी—प्रत्यरि तारा में नमक, विपत् और जन्म तारा में शाक, विपत्ति-तारा में गुड़ और निधन अर्थात् वधतारा में तिल तथा सोना (सुवर्ण) दान में दें ॥ ४१ ॥

द्वादशराशिस्थचन्द्रफलम्

प्रथमः स्थितिकृच्चन्द्रो द्वितीयश्चार्थलाभदः ।
तृतीये क्षेममारोग्यं चतुर्थः कलहप्रदः ॥ ४२ ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे धान्यधनागमः ।
सप्तमे राजसम्मानमष्टमे प्राणसंशयः ॥ ४३ ॥

नवमे धर्मलाभः स्याद्दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे जयो नित्यं द्वादशे मृत्युमादिशेत् ॥ ४४ ॥

अन्वयः—प्रथमः चन्द्रः स्थितिकृत्, द्वितीयः च अर्थलाभदः, तृतीये क्षेमम् आरोग्यं, चतुर्थे कलहप्रदः, पञ्चमे ज्ञानवृद्धिः च, षष्ठे धान्य-धनागमः, सप्तमे राजसम्मानम्, अष्टमे प्राणसंशयः, नवमे धर्मलाभः स्यात्, दशमे मानसेप्सितम्, एकादशे जयः नित्यं, द्वादशे मृत्युम् आदिशेत् ॥ ४२-४४ ॥

हिन्दी—पहला चन्द्रमा स्थितिकारक, दूसरा धन-लाभकारक, तीसरा कल्याण तथा स्वास्थ्यदायक, चौथा कलहकारक, पाँचवाँ ज्ञानप्रद, छठा धन-धान्यदायक, सातवाँ राजसम्मान, आठवाँ प्राणनाशक, नवाँ धर्मवर्धक, दसवाँ इच्छित फल-दायक, ग्यारहवाँ नित्य जयप्रद और बारहवाँ मृत्युकारक होता है ॥ ४२-४४ ॥

द्वादशप्रथमचन्द्रापवादः

अभिषेके निषेकेऽन्नप्राशने व्रतबन्धने ।
गृहप्रवेशे यात्रायां चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥ ४५ ॥
जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु ।
क्षौरभैषज्यवाद्याध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत् ॥ ४६ ॥

अन्वयः—अभिषेके निषेके अन्नप्राशने व्रतबन्धने गृहप्रवेशे यात्रायां (च) द्वादशगः चन्द्रः शुभः (भवति), जन्मनक्षत्रगः चन्द्रः सर्वकर्मसु प्रशस्तः (केवलं) क्षौरभैषज्यवाद्याध्वकर्तनेषु विवर्जयेत् ॥ ४५-४६ ॥

हिन्दी—राज्याभिषेक, गर्भाधान, अन्नप्राशन, व्रतबन्ध, गृहप्रवेश और यात्रा में द्वादश चन्द्र शुभ होता है। जन्म नक्षत्र का चन्द्रमा क्षौरकर्म, प्रथम औषध सेवन, संगीतशिक्षा, यात्रा और नख, वृक्ष आदि छेदन कार्यों को छोड़-कर शेष सभी कार्यों में शुभ होता है ॥ ४५-४६ ॥

प्रकारान्तरेण अपवादः

शुक्लपक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमो नवमः शुभः ।
कृष्णपक्षे विजानीयात् ताराशुद्धिर्बलीयसी ।
शुक्लपक्षे तथा चन्द्रे शुद्धिरित्यभिधीयते ॥ ४७ ॥

अन्वयः—शुक्लपक्षे द्वितीयः पञ्चमः नवमः चन्द्रः शुभः, कृष्णपक्षे ताराशुद्धिः बलीयसी विजानीयात् तथा शुक्लपक्षे चन्द्रे शुद्धिः इति अभिधीयते ॥४७॥

हिन्दी—शुक्लपक्ष में दूसरा, पाँचवाँ और नवाँ चन्द्रमा शुभ होता है। कृष्णपक्ष में तारा की शुद्धि बलवान् होती है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा की शुद्धि ही बलवान् होती है ॥ ४७ ॥

अशुभचन्द्रादौ शान्तिप्रकारः

चन्द्रे च शङ्खं लवणं तथर्क्षे तिथौ तथा कीर्त्तिततण्डुलांश्च ।
धान्यं च दद्यात्किल ऋक्षवारे देयास्तिला एवमनिष्टलग्ने ॥४८॥

अन्वयः—चन्द्रे शङ्खं, तथा ऋक्षे लवणं, तिथौ कीर्त्तिततण्डुलान्, ऋक्षवारे धान्यम् एवम् अनिष्टलग्ने तिलाः देयाः ॥ ४८ ॥

हिन्दी—अशुभ चन्द्रमा में शंख, अशुभ नक्षत्र में नमक, अशुभ तिथि में पूर्वोक्त विधान के अनुसार चावल, अशुभ नक्षत्र और वार में धान्य तथा अशुभ लग्न में तिलों का दान करके कार्य करें ॥ ४८ ॥

सिद्धियोगाः

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा च विख्याताः सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ ४९ ॥

अन्वयः—शुक्रे नन्दा, बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता, कुजे जया, गुरौ पूर्णाः, (एते) सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ ४९ ॥

हिन्दी—शुक्रवार को नन्दा, बुधवार को भद्रा, शनिवार को रिक्ता, मंगल को जया और गुरुवार को पूर्णा तिथियाँ हों तो सिद्धियोग होता है ॥ ४९ ॥

नन्दादितिथिचक्रम्

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५ या ३०

अमृतयोगः

बुधे नन्दा च मन्दे च कुजे भद्रा जया गुरौ।
पूर्णा रवौ शशाङ्के च भृगौ रिक्ताऽमृतं भवेत् ॥ ५० ॥

अन्वयः—बुधे मन्दे च नन्दा, कुजे भद्रा, गुरौ जया, रवौ शशाङ्के च पूर्णा, भृगौ रिक्ता तिथिः अमृतं भवेत् ॥ ५० ॥

हिन्दी—बुध और शनिवार को नन्दा तिथि, मंगल को भद्रा गुरुवार को जया, सूर्य तथा चन्द्रवार को पूर्णा और शुक्रवार को रिक्ता तिथि हो तो अमृत-योग होता है ॥ ५० ॥

वारनक्षत्रयोगोत्थोऽमृतयोगः

आदित्यहस्ता सुरपूज्यपूषा बुधानुराधा शनिरोहिणी च।
सोमे च सौम्यं कुजरेवती च शुक्राश्विनी चामृतयोगमाहुः ॥५१॥

अन्वयः—वारनक्षत्रयोगे सप्तविधम् अमृतयोगम् आचार्या आहुः अन्यत् स्पष्टम् ॥ ५१ ॥

हिन्दी—रविवार को हस्त नक्षत्र, गुरुवार को रेवती, बुधवार को अनुराधा, शनि को रोहिणी, बुध को मृगशिरा, मङ्गल को रेवती और शुक्रवार को अश्विनी नक्षत्र—ये ७ अमृतयोग होते हैं ॥ ५१ ॥

शुभयोगाः

मूलं रवौ पुष्यकरोत्तराणां योगो मृगाङ्कश्रवणाश्च सोमे।
कृशानुपुष्योत्तरभानि भौमे बुधेऽनुराधा वरुणः कृशानुः ॥ ५२ ॥
बृहस्पतौ पुष्यपुनर्वसू च भगाऽश्विनी च श्रवणं च शुक्रे।
शनैश्चरे स्वातिपितामहौ च योगाः किलैते शुभदायिनः स्युः ॥५३॥

अन्वयः—रवौ मूलं पुष्यकरोत्तराणां योगः, सोमे मृगाङ्कश्रवणाश्च, भौमे कृशानुपुष्योत्तरभानि, बुधे अनुराधा वरुणः कृशानुः, बृहस्पतौ पुष्यपुनर्वसू, शुक्रे भगाश्विनी श्रवणं च, शनैश्चरे स्वातिपितामहौ च एते योगाः किल शुभ-दायिनः स्युः ॥ ५२-५३ ॥

हिन्दी—रविवार को मूल, पुष्य, हस्त और तीनों उत्तरा, चन्द्रवार को रोहिणी, मृगशिरा और श्रवण, मङ्गलवार को कृत्तिका, पुष्य और तीनों

उत्तरा, बुधवार को अनुराधा, शतभिषा और कृत्तिका, गुरुवार को पुष्य, पुनर्वसु शुक्रवार को पूर्वाफाल्गुनी, अश्विनी और श्रवण, शनिवार को स्वाती तथा रोहिणी—ये योग निश्चय करके शुभ होते हैं ॥ ५२-५३ ॥

अशुभयोगाः

जन्मताराऽष्टमे चन्द्रे सङ्क्रान्तौ सूर्यगे विधौ ।
भद्रागण्डान्तरिक्तासु षष्ठयां नैव व्रजेत् क्वचित् ॥ ५४ ॥
द्वादश्यामपि चाष्टम्यां न गच्छेत् प्रस्थितोऽपि सन् ।
जन्ममासे न गन्तव्यं राज्ञा विजयमिच्छता ॥ ५५ ॥

अन्वयः—जन्मताराऽष्टमे चन्द्रे विधौ सूर्यगे च सङ्क्रान्तौ, भद्रागण्डान्त-रिक्तासु षष्ठयां च क्वचित् न व्रजेत् । द्वादश्यां अष्टम्यां च प्रस्थितः अपि न गच्छेत् । विजयम् इच्छता राज्ञा जन्ममासे न गन्तव्यम् ॥ ५४–५५ ॥

हिन्दी—जन्म तारा, आठवां चन्द्रमा और सूर्य की संक्रान्ति के समय ग्रहण काल में भद्रा तिथि, त्रिविधगण्डान्त (तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त, लग्न-गण्डान्त), रिक्ता, षष्ठी इनमें यात्रा नहीं करनी चाहिए । द्वादशी और अष्टमी तिथि में प्रस्थान रखने पर भी यात्रा न करे । विजय का इच्छुक राजा अपने जन्ममास में भी यात्रा न करें ॥ ५४-५५ ॥

मृत्युयोगाः

नन्दा सूर्ये कुजे चैव भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ५६ ॥

अन्वयः—सूर्ये कुजे च नन्दा, भार्गवचन्द्रयोः भद्रा, बुधे जया, गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा मृत्युदा भवति ॥ ५६ ॥

हिन्दी—रवि, मंगलवार को नन्दा तिथियां, शुक्र और सोमवार को भद्रा तिथियां, बुध को जया तिथियां, गुरुवार को रिक्ता तिथियां और शनिवार को पूर्णा तिथियां मृत्युकारक होती हैं ॥ ५६ ॥

वारदिक्शूलम्

शनौ चन्द्रे त्यजेत् पूर्वां दक्षिणस्यां दिशं गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमाशां बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥ ५७ ॥

प्राच्यां शनौ वह्निदिशन्न शीतगौ गुरौ तु याम्यां च बुधे च नैर्ऋतिम् ।
रवौ प्रतीच्यां भृगुजे न वायवे गच्छेदुदीच्यां न च मङ्गले बुधे ॥ ५८ ॥

अन्वयः—शनौ चन्द्रे पूर्वां, गुरौ दक्षिणस्यां; सूर्ये शुक्रे च पश्चिमाशां, बुधे भौमे तथा उत्तरां दिशं त्यजेत् । शनौ प्राच्यां न, शीतगौ वह्निदिशं न, गुरौ याम्यां न, बुधे नैर्ऋतिं न, रवौ प्रतीच्यां न, भृगुजे वायवे न, उदीच्यां मङ्गले बुधे च न गच्छेत् ।। ५७–५८ ।।

हिन्दी—शनि और चन्द्रवार को पूरब दिशा में, गुरुवार को दक्षिण दिशा में, रवि और शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगलवार को उत्तर दिशा में यात्रा न करे ।

शनिवार को पूर्व दिशा में, सोमवार को अग्निकोण में, गुरुवार को दक्षिण दिशा में, बुधवार को नैर्ऋत्यकोण में, रविवार को पश्चिम दिशा में, शुक्रवार को वायुकोण में, मंगलवार को उत्तर में और बुधवार को ईशान कोण में यात्रा न करे । इन दिशाओं में उक्त वारों को दिशाशूल होता है, अतः इन वारों में इन दिशाओं की यात्रा अशुभ होती है ।। ५७–५८ ।।

नक्षत्रदिक्शूलम्

ज्येष्ठां न व्रजेदैन्द्रीं प्राग्भाद्रे न च दक्षिणाम् ।
नोत्तरां पूर्वफाल्गुन्यां रोहिण्यां न च पश्चिमाम् ॥ ५९ ॥
अश्विन्यां दक्षिणां नैव व्रजेद्धस्ते न चोत्तराम् ।
तथा नैन्द्रीं व्रजेन्मूले पुष्ये चैव न पश्चिमाम् ॥ ६० ॥

अन्वयः—ज्येष्ठायां ऐन्द्रीं न, प्राग्भाद्रे दक्षिणां न, पूर्वाफाल्गुन्याम् उत्तरां न, रोहिण्यां पश्चिमां न व्रजेत्, अश्विन्यां दक्षिणां नैव, हस्ते उत्तरां न, तथा मूले ऐन्द्रीं न, पुष्ये पश्चिमां च न व्रजेत् ॥ ५९–६० ॥

हिन्दी—ज्येष्ठा नक्षत्र में पूरब दिशा की, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में दक्षिण दिशा की, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर की, रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम की, अश्विनी नक्षत्र में दक्षिण दिशा की, हस्त नक्षत्र में उत्तर की, मूल नक्षत्र में पूरब दिशा की और पुष्य नक्षत्र में पश्चिम दिशा की यात्रा न करे । ये नक्षत्र दिशाशूल कहे जाते हैं ॥ ५९–६० ॥

यात्रायां सर्वसिद्धिकरनक्षत्राणि

सर्वदिग्गमने शस्तः पुष्याश्विश्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ ६१ ॥

अन्वयः—पुष्याश्विश्रवणः मृगः सर्वदिग्गमने (तथा) शस्तः स्यात् । यथा पुष्यः गुरुः च विद्यायां सर्वसिद्धिकरः स्यात् ॥ ६१ ॥

हिन्दी—जैसे पुष्य, अश्विनी, श्रवण और मृगशिरा नक्षत्र सभी दिशाओं की यात्रा में शुभ होते हैं। उसी प्रकार पुष्य नक्षत्र और गुरुवार विद्यारम्भ में सिद्धिदायक होते हैं ॥ ६१ ॥

यात्रायां शुभलग्नानि

लग्ने कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।
यात्रा चन्द्रबले कार्या [1]शकुनश्च विचारयेत् ॥ ६२ ॥

अन्वयः—लग्ने कन्या मन्मथः तुलाधरश्च यात्रायां शुभं स्यात् । चन्द्रबले यात्रा कार्या, शकुनं च विचारयेत् ॥ ६२ ॥

हिन्दी—कन्या, मिथुन, मकर और तुला लग्न यात्रा में शुभ होते हैं। चन्द्रमा के बली रहने पर यात्रा करें और शकुनों का भी विचार करें ॥ ६२।

अङ्कविचारः

तिथिर्वारश्च नक्षत्रमेकीकृत्य त्रिधा पुनः ।
द्वि-त्रि-चतुर्भिर्गुणितं रस-सप्ताष्टभाजितम् ॥ ६३ ॥

अन्वयः—तिथिर्वारं नक्षत्रं च एकीकृत्य त्रिधा स्थाप्यम् । पुनः द्वि-त्रि-चतुर्भिः गुणितं रससप्ताष्टभाजितं कार्यम् ॥ ६३ ॥

हिन्दी—तिथि-वार-नक्षत्र की संख्या जोड़कर क्रमशः २,३,४ से गुणा कर तीन स्थानों में रखें, इनमें क्रम से ६, ७, ८ का भाग देना चाहिये । शून्य शेष आने पर अशुभ और अंक शेष रहने पर शुभ होता है। जैसा कि अगले पद्य में निर्देश किया गया है ॥ ६३ ॥

सामान्यशकुनानि

१. अग्रे धेनुः सवत्सा वृषगजतुरगा दक्षिणावर्तवह्नि-
दिव्यस्त्री पूर्णकुम्भो द्विजवर-गणिका-श्वेतमाला-पताकाः ।
मत्स्यो मांसं घृतं वा दधिमधुसहितं काञ्चनं शुक्लवस्त्रं
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः ॥

तस्य फलम्

आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये दरिद्रता ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्के विजयी भवेत् ॥ ६४ ॥

अन्वयः—आदिशून्ये हानिः, मध्यशून्ये दरिद्रता, अन्त्यशून्ये मृत्युः भवेत्, सर्वाङ्के विजयी भवेत् ॥ ६४ ॥

हिन्दी—आदिशून्य में हानि, मध्यशून्य में दरिद्रता और अन्तिम शून्य में मृत्यु होती है और यदि सभी जगह अंक प्राप्त हों तो विजय की प्राप्ति होती है ॥ ६४ ॥

वाहनानि

तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं वाहनमुच्यते ॥ ६५ ॥

अन्वयः—तिथिः वारं नक्षत्रं च नामाक्षरसमन्वितं कार्यं नवभिः भागं हरेत्, शेषं वाहनम् उच्यते ॥ ६५ ॥

हिन्दी—तिथि, वार और नक्षत्रों की संख्या को अपने नाम के अक्षरों की संख्या में जोड़कर ९ का भाग देने से शेष अंकों को क्रम से वाहन समझें । नीचे वाहनों के नाम दिये गये हैं ॥ ६५ ॥

वाहननामानि

गर्दभस्तुरगो हस्ती मेषजम्बुकसिंहकाः ।
काकहंसमयूराश्च नवैते वाहनाः स्मृताः ॥ ६६ ॥

अन्वयः—गर्दभः तुरगः हस्ती मेषजम्बुकसिंहकाः काकहंसमयूराः च, एते नव वाहनाः स्मृताः ॥ ६६ ॥

हिन्दी—शेषांकों के क्रम से वाहनों के नाम समझें । यथा—१. गधा, २. घोड़ा, ३. हाथी, ४. भेड़ा, ५. सियार, ६. सिंह, ७. कौआ, ८. हंस और ९. मोर ॥ ६६ ॥

एतेषां फलानि

गर्दभो गञ्जनं याति तुरगो विजयावहः ।
हस्तिना सुखसम्पत्तिः मेषो मिष्टान्नभोजनम् ॥ ६७ ॥

जम्बुको हरति ह्यायुः काकश्च कलहप्रदः ।
सिंहः शत्रुविनाशाय सिद्धिर्हंसमयूरयोः ॥ ६८ ॥

अन्वयः—गर्दभः गञ्जनं याति, तुरगः विजयावहः, हस्तिना सुखसम्पत्तिः मेषः मिष्टान्नभोजनं, जम्बुकः आयुः हरति, काकः च कलहप्रदः, सिंहः शत्रुविनाशाय, सिंहमयूरयोः सिद्धिः (भवति) ॥ ६७-६८ ॥

हिन्दी—गदहा ग्लानि, घोड़ा विजय, हाथी सुख-सम्पत्ति, भेड़ा मधुर भोजन, सियार आयुनाश, कौआ कलह, सिंह शत्रुनाश और हंस तथा मोर सिद्धिप्रद होते हैं ॥ ६७-६८ ॥

उदाहरण—रामेश्वर को चैत्र शुक्ल पूर्णिमा पुष्य नक्षत्र सोमवार को यात्रा के लिए वाहन विचार करना है तो तिथि १५, वार २, नक्षत्र ८, नामाक्षर ४, अतः १५+२+८+४=२९, इसमें ९ का भाग दिया तो २९÷९ शेष २ बचा, इसलिए दूसरा घोड़ा वाहन हुआ, इसका फल विजयप्राप्ति है ।

वक्तव्य—गञ्जन शब्द का अर्थ ग्लानि दिया है, लगता है यहां पर 'गर्दभो ग्लानिदः प्रोक्तो' ऐसा पाठ होना चाहिये ।

आनन्दादियोगाः

आनन्दः कालदण्डश्च धूम्राख्योऽथ प्रजापतिः ।
सौम्यो ध्वाङ्क्षो ध्वजश्चैव श्रीवत्सो वज्रमुद्गरौ ॥ ६९ ॥
क्षत्रं मित्रं मानसं च पद्माख्यो लुम्बकस्तथा ।
उत्पातमृत्युकालाश्च सिद्धिश्चाऽथ शुभोऽमृतः ॥ ७० ॥
मुशलं गदमातङ्गौ राक्षसश्च चरस्थिरः ।
प्रवर्द्धमाना विज्ञेया योगा नामसदृक्फलाः ॥ ७१ ॥

अन्वयः—आनन्दप्रभृतयोऽष्टाविंशतियोगाः क्रमेणोक्ताः । एते नामसदृक्फलानि भवन्तीति ज्ञेयम् ॥ ६९–७१ ॥

हिन्दी—आनन्द-कालदण्ड-धूम्र-प्रजापति-सौम्य-ध्वाङ्क्ष-ध्वज-श्रीवत्स-वज्र-मुद्गर-छत्र-मित्र-मानस-पद्म-लुम्बक-उत्पात-मृत्यु-काल-(काण)-सिद्धि-शुभ-अमृत-मुशल-गद-मातंग-राक्षस-चर-स्थिर(सुस्थिर)-प्रवर्धमान—ये २८ योग अपने-अपने नाम के अनुसार फलदायक होते हैं ॥ ६९–७१ ॥

एतेषां गणनाविधिः

सूर्येऽश्विभात्तुहिनगौ खलु सौम्यधिष्ण्यात्
सर्पाच्च भूमितनये शशिजे च हस्तात्।
मैत्रात् गुरौ भृगुसुते किल वैश्वदेवा-
च्छायासुते वरुणभात् क्रमशः स्युरेते ॥ ७२ ॥

अन्वयः—सूर्ये अश्विभात्, तुहिनगौ सौम्यधिष्ण्यात्, भूमितनये सर्पात्, शशिजे हस्तात्, गुरौ मैत्रात्, भृगुसुते वैश्वदेवात्, छायासुते वरुणभात् एते खलु क्रमशः योगाः स्युः ॥ ७२ ॥

हिन्दी—रविवार को अश्विनी से, सोमवार को मृगशिरा से, मंगलवार को आश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढा से, शनिवार को शतभिषा से आनन्दादि योगों की गणना करे ॥ ७२ ॥

वर्गाणां शत्रु-मित्र-समाः

यो यस्य पञ्चमस्थाने स वैरी तस्य प्रोच्यते।
उदासीनस्तृतीये स्याच्चतुर्थे मित्रमुच्यते ॥ ७३ ॥

अन्वयः—यः यस्य पञ्चमस्थाने अस्ति सः तस्य वैरी उच्यते, तृतीये उदासीनः चतुर्थे च मित्रम् उच्यते ॥ ७३ ॥

हिन्दी—जो वर्ग जिसके पाँचवें स्थान में होता है, वह उसका शत्रु होता है, तीसरा उदासीन अर्थात् सम और चौथा मित्र होता है ॥ ७३ ॥

तस्य फलम्

स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च शाश्वती।
उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिर्भवेत् ॥ ७४ ॥
मेषमूषकयोः सम्पद् गजमार्जारयोः स्थितिः।
श्वाने मेषे च मृत्युः स्यात्पीडा स्यात् सिंहनागयोः ॥ ७५ ॥

अन्वयः—स्ववर्गे परमा प्रीतिः, मित्रे शाश्वती प्रीतिः, उदासीने अल्पा प्रीतिः, शत्रुवर्गे मृतिः भवेत्, मेषमूषकयोः सम्पद्, गजमार्जारयोः स्थितिः, श्वाने मेषे च मृत्युः स्यात्, सिंहनागयोः च पीडा स्यात् ॥ ७४-७५ ॥

हिन्दी—अपने वर्ग के साथ अत्यन्त प्रेम, मित्रवर्ग के साथ स्थायी प्रेम, समवर्ग के साथ सामान्य प्रेम और शत्रुवर्ग के साथ मृत्युदायक कष्ट होता है।

मेष-मूषक वर्ग में सम्पत्तिलाभ और बिडालवर्ग में स्थिर वास, श्वान (कुत्ता) और मेष (भेड़ा) वर्ग में मृत्यु तथा सिंह और नाग वर्ग में कष्ट होता है। इसका विचार विवाह आदि में होता है ॥ ७४-७५ ॥

वर्गशर-संख्या

पक्षी वसु शर पंच मंजार, षट्केशरी श्वान शर चार।
अहि शर सात इन्दु शर एक गज शर तीनि वेवि शर मेष ॥ ७६ ॥

विशेष—यह संस्कृत पद्य नहीं है।

हिन्दी—गरुड़ के ८, बिडाल के ५, सिंह के ६, श्वान के ४, सर्प के ८, मूषक का १, हाथी के ३ और मेष के २ शर होते हैं ॥ ७६ ॥

वर्गविचारः

अवर्गो गरुडो ज्ञेयो बिडालः स्यात् कवर्गकः।
चवर्गः सिंहनामा च टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः ॥ ७७ ॥
सर्पाख्यः स्यात् तवर्गोऽपि पवर्गो मूषको मतः।
यवर्गो गजनामाख्यस्तथा मेषः शवर्गकः ॥ ७८ ॥

अन्वयः—सुविशदः।

हिन्दी—इसका अर्थ चक्र द्वारा समझें।

वर्णाः	अ इ उ ऋ लृ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	र फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
शराः	८	५		४	८	१	३	२
वर्गाः	गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हाथी	मेष

ग्रामवासे दशाविचारः

अवर्गादिशरैः सङ्ख्याग्रामनामदिशामयम् ।
नागैर्भागं समाहृत्य शेषं दिनदशा भवेत् ॥ ७९ ॥

अन्वयः—या ग्रामनामदिशामयम्, अवर्गादिशरैः संख्या, ताम् एकीकृत्य नागैः भागं समाहृत्य शेषं दिनदशा भवेत् ॥ ७९ ॥

हिन्दी—गाँव (या शहर) का नाम, अपना नाम, दिशा की संख्या और अवर्ग आदि शर संख्याओं का योग कर उसमें ७ का भाग देकर जो शेष बचे तदनुसार दिन-दशा होती है।

यथा—ग्राम (शहर) वाराणसी, गजवर्ग, शरसंख्या ३। अपना नाम रामेश्वर, गजवर्ग, शरसंख्या ३। दिशा—पूर्व, गरुडवर्ग, शरसंख्या ८। योग—३ + ३ + ८ = १४, इसमें ७ का भाग दिया तो शेष शून्य बचा, अतः दिन-दशा शनि की हुई ॥ ७९ ॥

दशाफलम्

शुभानां च दशा शस्ता चान्येषां न शुभा स्मृता ।
एवं विचार्य वक्तव्यं फलं दैवज्ञकोविदैः ॥ ८० ॥

अन्वयः—शुभानां दशा शस्ता, अन्येषां शुभा न स्मृता, एवं विचार्य दैवज्ञ-कोविदैः फलं वक्तव्यम् ॥ ८० ॥

हिन्दी—शुभ ग्रहों की दशा शुभ और अशुभ ग्रहों की दशा अशुभ होती है, ज्योतिर्विदों को इस प्रकार विचार कर फल कहना चाहिए ॥ ८० ॥

काकिणीविचारः

स्ववर्गं द्विगुणीकृत्य परवर्गेण योजयेत् ।
अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः सोऽर्थदो भवेत् ॥ ८१ ॥

अन्वयः—स्ववर्गं द्विगुणीकृत्य परवर्गेण योजयेत्, (तत्र) अष्टभिः भागं च हरेत्। यः अधिकः स्यात् सः अर्थदः भवेत् ॥ ८१ ॥

हिन्दी—अपने वर्ग की संख्या को दुगुना करके दूसरे की वर्गसंख्या में जोड़कर ८ का भाग देने से जो अधिक हो, वह धन देने वाला होता है ॥८१॥

उदाहरण—रामेश्वर नाम से वाराणसी नगर में काकिणी विचार करना है। रामेश्वर, गजवर्ग, शरसंख्या ७ और वाराणसी, गजवर्ग, शरसंख्या ७ है। उक्त श्लोकानुसार अपनी वर्गसंख्या को दूना किया ७ × २ = १४ + ७ = २१ हुआ, इसमें ८ का भाग दिया तो ५ शेष रहा। और ग्राम (नगर) की वर्गसंख्या ७ को दुगुना कर १४, उसमें नाम की वर्गसंख्या ७ को जोड़ा तो २१ हुआ, इसमें ८ का भाग दिया तो ५ शेष रहा, अतः दोनों ही धन देने वाले हुए।

प्रकारान्तरेण काकिणीविचारः

अक्षरं द्विगुणीकृत्य मात्रां कृत्वा चतुर्गुणाम्।
ग्रामनाम्नोरङ्कमेकीकृत्य सप्तविभाजितम् ॥ ८२ ॥
शून्यैकचतुरे हानिस्त्रिपञ्चसु तु मध्यमम्।
द्विषष्ठयोश्च सम्पत्तिर्भवतीति न संशयः ॥ ८३ ॥

अन्वयः—अक्षरं द्विगुणीकृत्य मात्रां चतुर्गुणां कृत्वा (तदनन्तरं) ग्रामनाम्नोः अङ्कम् एकीकृत्य सप्तविभाजितं (कुर्यात्), यस्य फलं निर्दिशति—शून्यैकचतुरे हानिः, त्रिपञ्चसु च मध्यमं, द्विषष्ठयोः च सम्पत्तिः भवति इति संशयः न ॥ ८२-८३ ॥

हिन्दी—ग्राम और अपने नाम के अक्षरों को दूना करे और मात्राओं को चौगुना कर सबका योग कर उसमें ७ का भाग देने से यदि शून्य या चार शेष रहे तो हानि, तीन, पाँच शेष रहे तो मध्यम, दो, छः शेष रहे तो निःसन्देह सम्पत्ति प्राप्त होती है ॥ ८२-८३ ॥

उदाहरण—ग्राम (नगर) वाराणसी, नाम रामेश्वर, अतः नगर नाम में ४ अक्षर, मात्रा ६, इसी प्रकार नाम में ४ अक्षर, मात्रा ४ हैं। अतः ४ × २ = ८। ६ × ४ = २४। ४ × २ = ८। ४ × ४ = १६, तदनन्तर ८ + २४ + ८ + १६ = ५६, इसमें ७ का भाग दिया तो शून्य शेष रहा। इसका फल हानि है। इसी प्रकार अन्यत्र विचार करें।

राहुविचारः

मार्गे पौषे तथा माघे पूर्वस्यां राहुसंस्थितिः।
फाल्गुने च तथा चैत्रे वैशाखे दक्षिणे भवेत् ॥ ८४ ॥

ज्येष्ठे मासि तथाऽऽषाढे श्रावणेऽपि च पश्चिमे ।
भाद्रे तथाऽऽश्विने मासि कार्त्तिके चोत्तरे भवेत् ॥ ८५ ॥

अन्वयः—मार्गे पौषे तथा माघे पूर्वस्यां राहुसंस्थितिः, फाल्गुने चैत्रे तथा वैशाखे च दक्षिणे (संस्थितिः) भवेत्, ज्येष्ठे आषाढे श्रावणे मासि च पश्चिमे तथा भाद्रे आश्विने कार्तिके च मासि उत्तरे भवेत् ॥ ८४–८५ ॥

हिन्दी—मार्गशीर्ष, पौष, माघ मास में पूर्व दिशा में; फाल्गुन, चैत्र, वैशाख में दक्षिण दिशा में: ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण मास में पश्चिम दिशा में और भाद्रपद, आश्विन (कुआर), कार्तिक मास में राहु (काल) का निवास उत्तर दिशा में होता है। उपर्युक्त मासों का क्रम सौरमान से लिया जाता है ॥ ८४–८५ ॥

वास्तुचक्रम्

सूर्याक्रान्तात् त्यजेत् सप्त ततश्चैकादशं शुभम् ।
शेषं नन्दर्क्षकं दुष्टं वास्तुचक्रे विचारयेत् ॥ ८६ ॥

अन्वयः—सूर्याक्रान्तात् सप्तनक्षत्राणि त्यजेत् । ततः च एकादशं शुभं, शेषं नन्दर्क्षकं दुष्टम् (एवं) वास्तुचक्रे विचारयेत् ॥ ८६ ॥

हिन्दी—सूर्य के नक्षत्र से ७ नक्षत्रों को छोड़कर इसके आगे ११ नक्षत्र शुभ होते हैं और इसके बाद के ९ नक्षत्र दुष्ट अर्थात् अशुभ होते हैं। इनका विचार वास्तुचक्र में अवश्य करना चाहिए ॥ ८६ ॥

बीजबन्धनयोगाः

हस्तद्वयाच्युतयुगेऽदितितोयनाथे
मैत्रे गुरौ कमलजोत्तरचन्द्रपौष्णे ।
रिक्तां विहाय भृगुजेज्यबुधे च कुर्याद्
बीजस्य बन्धनविधिं स्थिरभे गृहस्थः ॥ ८७ ॥
मार्गे माघे फाल्गुने च धान्यानां बीजबन्धनम् ।
कर्त्तव्यं पर्वषष्ठीं च भद्रां त्यक्त्वा च सूरभिः ॥ ८८ ॥

अन्वयः—हस्तद्वयाऽच्युतयुगेऽदितितोयनाथे मैत्रे गुरौ कमलजोत्तरचन्द्र-पौष्णे नक्षत्रे रिक्तां विहाय तिथौ भृगुजेज्यबुधे दिवसे स्थिरभे गृहस्थः बीजस्य

बन्धनविधिं कुर्यात् । मार्गे, माघे फाल्गुने च पर्वषष्ठीं भद्रां च त्यक्त्वा सूरिभिः धान्यानां बीजबन्धनं कर्तव्यम् ॥ ८७–८८ ॥

हिन्दी––हस्त, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, पूर्वाषाढ़ा, अनुराधा, पुष्य, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, मृगशिरा और रेवती— इन नक्षत्रों में, रिक्ता ४।९।१४ से रहित तिथियों में, बुधे, गुरु, शुक्र वारों में स्थिर लग्नों २।५।८।११ में गृहस्थियों के लिए बीजबन्धन शुभ होती है।

मार्गशीर्ष (अगहन), माघ, फाल्गुन मासो में, पर्वदिनों (कृष्णपक्ष की ८।१४।३० तथा पूर्णिमा, संक्रान्ति), षष्ठी तिथि और भद्रा तिथियों (२।७। १२) को छोड़कर शेष तिथियों में बीजबन्धन करना चाहिये ॥ ८७–८८ ॥

इति श्रीमत्पण्डिततारादत्ततनूजपण्डितब्रह्मानन्दत्रिपाठिकृता
'चन्द्रिका'-नाम्नी व्याख्या समाप्ता ।

व्याख्याकर्तुः परिचयः

माद्यदुद्दामविघ्नौघ-द्विरेफकुलतर्जकम् ।
सिन्दूरारुणशोभाढ्यं स्मेराऽऽस्यं हृदि भावये ॥ १ ॥

राराज्यते भारतभूमहार्हैं रत्नैरशेषैरभितः प्रकीर्णः ।
यत्राऽऽगमाय स्पृहयन्ति देवाः स्वर्गीयसौख्यानि विहाय सद्यः ॥ २ ॥

तत्रैकदेशे यशसां निधानो विराजते गुर्जरदेश एषः ।
यत्राऽभवद् गौतमगोत्रजन्मा सत्सामवेदी कुथुमाऽऽख्यशाखी ॥ ३ ॥

लोकोत्तरज्ञानविकीर्णभाभिर्भास्वत्तनुः कोऽप्यवताररूपः ।
श्रीमान् सुधीर्नीतिविदां वरिष्ठः षट्शास्त्रवेत्ता विबुधावतंसः ॥ ४ ॥

चन्द्रश्रिया भूषितसर्वकायः श्रीचन्द्रनामा प्रथितस्-त्रिपाठी ।
युग्माब्धिरामैकशकाब्दमध्ये विख्यातकीर्तिर्नृपतिर्बभूव ॥ ५ ॥

उद्यानचन्द्रः सुजनाभिरामः कूर्माचलीयोऽभिनवः शशाङ्कः ।
राज्ये तदीये शुकदेवनाम्ना श्रीचन्द्रदेवः स्वसुतेन साकम् ॥ ६ ॥

कूर्माद्रेर्मुकुटे निसर्गरुचिरे कोसी-सुवालाऽऽवृते-
श्रीवल्ला-गणनाथ-सैममहिते नन्दाऽऽख्यदेव्या युते ।
देवैः सिद्धमहर्षिभिर्बुधजनैः संसेविते प्राक्तनैर्-
अल्मोडानगरे समेत्य ससुखं वासं स्वकीयं व्यधात् ॥ ७ ॥

धरामूर्ध्नि रम्ये हिमाद्रेः प्रसारे समेषां जनानां मनोदृग्विहारे ।
गिरे पावने सर्वदा निर्विकारे निवासं स चक्रेऽथ चौसार-सारे ॥ ८ ॥

स्वीकृत्य वासं नृपतेर्निदेशान्-मन्त्रागमज्ञाननिधिः स तूर्णीम् ।
अभ्यर्च्य देवान् कुलदेवताश्च तत्रत्य भूमिं सजलामकार्षीत् ॥ ९ ॥

प्रसन्नेन राज्ञा तदा भूसुराय प्रपूज्याऽथ भूमिं धनं पुष्कलञ्च ।
समाहूय दत्तं सपुत्रेण तेन श्रितं सादरं सत्सभापण्डितेन ॥ १० ॥

सम्मानसीमामधिरुह्य धीरः सद्धर्मनिष्ठः श्रुतिशास्त्रसम्मतान् ।
गृह्यान् बहून् यज्ञविधीन् विधाय पुत्रे समारोप्य गृहस्य भारम् ॥ ११ ॥

विशेषसंन्यासविधानतो यः सन्यस्तदेहः स चिरं चकास्ति ।
वंशे तदीये गुणगौरवाऽऽढ्ये जाता अनेके विदुषां वरेण्याः ॥ १२ ॥

तस्मिन् सुधांशुविमले सुकुले बभूव श्रीमान् सतां गुणधरो मुरलीधरोऽयम् ।
यस्याऽवदातचरितान्यधुनापि मर्त्या आदर्शवद् व्यवहरन्ति न विस्मयोऽत्र ॥ १३ ॥

तस्माद् बभूव सुदिने स्वकुलावतंसः प्राज्ञः प्रतापविमलो द्विजकर्मनिष्ठः ।
पित्रोर्मनोरथशतैः सुकृतैरनेकैर्मान्यो **मनोरथ** इति प्रथिताभिधानः ॥ १४ ॥
जातास्ततो बलपराक्रमशीलयुक्ताः पुत्राः कुशाग्रधिषणास्त्रय एव योग्याः ।
तेष्वग्रिमः सुविदितो **हरिदत्त**-नामा स्वल्पायुरेव सुरलोकमगात् स्वपुण्यैः ॥ १५ ॥
तस्यानुजः सच्चरितः सुरूपः **श्रीकृष्ण**-नामा महनीयकीर्तिः ।
भाषानुरागात् स गतो विदेशं स्निग्धान् समग्रान् प्रविहाय बन्धून् ॥ १६ ॥

भ्राता चित्रकलासु तस्य निपुणः सङ्गीतवित् सात्विकः
सद्वैद्यः सुकृती परोपकरणो गृह्यागमे पारगः ।
नित्यं शम्भुपदारविन्दयुगले श्रद्धासमृद्धाऽऽशयस्
तारादत्त-बुधस्त्रिपाठिकुलजः सम्मानसीमाश्रितः ॥ १७ ॥

पत्नी तदीया गुणशीलयुक्ता **लक्ष्मी**ति नाम्नी पतिभक्तिनिष्ठा ।
कन्याऽथ **पाण्डेयशिरोमणेः** सा प्रासूत कन्ये सुतमेकमीड्यम् ॥ १८ ॥
दिवङ्गता पञ्चखशून्ययुग्मे संवत्सरे श्रावणमासि कृष्णे ।
गौरीतिथौ पुण्यवती शनौ सा कुटुम्बहार्दं सहसा विहाय ॥ १९ ॥

तत्सूनुर्जननीवियोगवशतः स्वाध्यायबुद्ध्या गृहात्
काशीम्प्राप्य भिषग्गुरोरधिजगे **श्रीलालचन्द्रा**ऽभिधात् ।
आयुर्वेदमितःपरं गुरुवरात् खिस्तेऽन्ववायोद्भवाद्
ब्रह्मानन्द-बुधोऽपठत् सुललितां साहित्यविद्यामपि ॥ २० ॥

तत्पत्नी सकलाकलासु कुशला **तारा**ऽभिधा श्रीमती
पुत्रान् सा सुषुवे क्रमेण चतुरः कन्याद्वयं प्राक् ततः ।
पुत्राः संस्कृतवाङ्मयं पुनरिमे पाश्चात्यविद्यामपि
श्रीविश्वेशकृपाकटाक्षवशतः सर्वे पठन्त्याऽऽदरात् ॥ २१ ॥

कूर्माद्रौ **नयनीसरोवर**मिति ख्यातञ्च यन्मण्डलं
तस्यैवास्ति समीपवर्ति सुमहद् **भीमाभिधानं सरः** ।
प्राक्तस्यास्ति **शिलावटी**तिविदितो ग्रामोऽभिरामो द्विजैस्-
तस्मिन् **ब्रह्मकुटी** तदीयवसतिः पुण्योच्चयैः शोभिता ॥ २२ ॥

त्रिपाठिकुलवर्य्याणां सदाचारपरायणा ।
सद्धर्मकर्मनिष्णाता राजिरेषा विराजताम् ॥ २३ ॥